

**« L'objet de vos pensées » (Phil.4.4-9)**

Résumé : Accorde une grande attention à ta joie dans le Seigneur parce que ta paix, la paix de l'Église et son témoignage, y sont intimement liés.

**1. Ta bataille pour la joie dans le Seigneur**

- Domaines des relations

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

- Domaines des circonstances

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

**2. « Check » tes pensées**

- Nourris tes pensées

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

- Vrai, honorable, juste, pur, aimable, mérite l'approbation, vertueux, digne de louange

---

---

---

---

---

---

---

---

**3. « Check » tes bottines**

- Choisis tes modèles parmi les gens intègres

---

---

---

---

---

---

---

---

- Agis pour trouver ta joie dans le Seigneur

---

---

---

---

---

---

---

---